डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, 1 और 2 सैमुअल, सत्र 9, 1 शमूएल 13-14

© 2024 रॉबर्ट चिशोल्म और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. बॉब चिशोल्म 1 और 2 सैमुअल पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 9, 1 सैमुअल 13-14 है। शाऊल ने एक राजवंश को गँवा दिया, जोनाथन के विश्वास ने एक जीत को प्रज्वलित कर दिया, और शाऊल ने एक जीत को कमजोर कर दिया।

इस पाठ में, हम 1 शमूएल 13 और 14 को देखेंगे। आपको याद होगा कि अध्याय 11 में शाऊल ने इस्राएल को सैन्य विजय दिलाई थी। उस समय, सैमुअल ने राजत्व का नवीनीकरण किया।

शाऊल के राजा बनने का सार्वजनिक उत्सव मनाया गया। अब पूरा इजराइल उनका समर्थन कर रहा है. लेकिन फिर 1 शमूएल 12 में शमूएल ने लोगों का सामना किया और उन्हें याद दिलाया कि पुराने नियम अभी भी लागू होते हैं।

यदि आप आज्ञाकारी हैं तो आप सुरक्षा और आशीर्वाद का अनुभव करेंगे। राजा का होना सुरक्षा और आशीर्वाद की गारंटी नहीं है। तुम्हें और तुम्हारे राजा को प्रभु की आज्ञा का पालन करना होगा।

तो, हम सोच रहे हैं कि जैसे ही अध्याय 12 समाप्त होगा, शाऊल कैसे करेगा? यदि हम पहली बार कहानी पढ़ रहे हैं तो शाऊल के अधीन इस्राएल कैसे कार्य करेगा? अध्याय 13 में हमें पता चलता है कि शाऊल के अधीन इस्राएल इतना अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएगा। शाऊल स्वयं असफल होने जा रहा है और वास्तव में, अपने वंश को खो देगा। इसलिए, जब हम 1 शमूएल 13 और 14 के माध्यम से अपना काम करते हैं तो तीन प्रमुख खंड होते हैं।

मुझे लगता है कि हम इसे एक बड़ा प्रकरण कह सकते हैं, लेकिन इसके तीन प्रमुख खंड हैं। अध्याय 13 श्लोक 1 से 15 जिसका मैंने शीर्षक दिया है शाऊल ने एक राजवंश को खो दिया। और फिर 1 शमूएल 13 श्लोक 16 से अध्याय 14 श्लोक 23 तक।

तो, 13, 16 से 14, 23। जोनाथन, शाऊल का बेटा, आगे बढ़ने जा रहा है और एक बड़ी जीत हासिल करेगा और मैंने इसे जोनाथन के विश्वास को एक जीत का शीर्षक दिया है। वास्तव में शाऊल और जोनाथन के बीच काफी विरोधाभास है, लेकिन जैसे-जैसे हम परिच्छेद पर काम करेंगे हम इसके बारे में और अधिक बात करेंगे।

और फिर अध्याय 14 श्लोक 24 से 52 में, जोनाथन ने यह महान विजय हासिल की है, लेकिन फिर इन श्लोकों में, शाऊल उस जीत को कमजोर करने जा रहा है। और इसलिए यह तीसरा प्रमुख खंड है। अध्याय 14 श्लोक 24 से 52 तक, शाऊल ने जीत को कमजोर कर दिया।

इसलिए, हम इन अध्यायों को एक इकाई के रूप में निपटाएंगे, लेकिन यह महसूस करेंगे कि हमारे पास वैचारिक रूप से तीन बिल्कुल अलग-अलग खंड हैं जिन पर हम ध्यान केंद्रित करने

जा रहे हैं क्योंकि हम अनुच्छेद के माध्यम से अपना काम करते हैं। क्योंकि हम इनसे एक ही पाठ में निपट रहे हैं, हमें कुछ चीजों को सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता होगी और हम पाठ में उतने विवरण के साथ नहीं जा पाएंगे जितना हम चाहते हैं। लेकिन आइए अध्याय 13 श्लोक 1 से 15 तक देखें जहां शाऊल ने अपना वंश खो दिया।

उसे अभी-अभी राजा बनाया गया है और अब वह इस राजवंश को गँवा देगा, भले ही मुझे लगता है कि कुछ समय बीत चुका है। और इसलिए, इस अध्याय का बड़ा विचार यह है कि, भगवान के लोग मूर्खतापूर्वक भगवान के वचन की अवज्ञा करके अपने विशेषाधिकार और आशीर्वाद को खो सकते हैं। यहां शाऊल के अनुभव से एक सबक सीखा जा सकता है।

जब हम अध्याय 13 की शुरुआत में एनआईवी पढ़ते हैं, तो हमने पढ़ा कि शाऊल जब राजा बना तब वह 30 वर्ष का था और उसने 42 वर्षों तक इस्राएल पर शासन किया। नेट बाइबल अनुवाद, एक अनुवाद जिसके लिए मैंने संपादक के रूप में कार्य किया, इसमें शाऊल 30 वर्ष का था जब उसने शासन करना शुरू किया और उसने 40 वर्ष तक इज़राइल पर शासन किया। और यहां अनुवादकों के बीच कुछ अनिश्चितता है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि इस बिंदु पर हिब्रू पाठ बहुत ही भ्रमित करने वाला है। इसमें कहा गया है कि शाऊल जब राजा बना तब प्रतीत होता है कि वह एक वर्ष का था और उसने इस्राएल पर दो वर्ष तक शासन किया। यह स्पष्टतः सही नहीं है।

और इसलिए विद्वानों ने अनुमान लगाया है, ठीक है, शायद वह 30 वर्ष का था, लेकिन यह सिर्फ एक अनुमान है। उन्हें प्रेरितों के काम अध्याय 13, श्लोक 21 से 40 वर्ष मिलते हैं, जहाँ हम पढ़ते हैं कि शाऊल ने इस्राएल पर 40 वर्षों तक शासन किया। और इससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि क्यों कुछ अनुवाद पहले सैमुअल 13, एक एनआईवी 42 में 40 के साथ जाते हैं।

वे यह मानकर चल रहे होंगे कि अधिनियम का विवरण एक सामान्य पूर्ण संख्या की तरह है। और फिर वे दोनों को हिब्रू पाठ से ले रहे हैं और इसमें जोड़ रहे हैं। तो, यहां कुछ अनिश्चितता है।

हम इस बारे में स्पष्ट नहीं हैं कि वास्तव में जब उसने शासन करना शुरू किया तो उसकी उम्र कितनी थी और उसने कितने समय तक शासन किया। लेकिन अधिनियमों का अनुच्छेद, चूँकि यह प्रेरित धर्मग्रंथ है, सुझाव देता है कि उसने 40 वर्षों या उसके आसपास शासन किया। लेकिन इस विशेष मामले में, शाऊल के साथ एक सेना है।

और जोनाथन, जो शाऊल का पुत्र है, इस समय शाऊल का एक पुत्र है। पहले वह छोटा आदमी था, लेकिन अब उसके पूर्ण वयस्क बेटे हैं। तो, ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ समय बीत चुका है।

और जोनाथन वही करता है जो शाऊल को अध्याय 10 में करना चाहिए था। यदि आप याद करें, अध्याय 10 में, शमूएल ने शाऊल को संकेत दिए थे और उसने कहा था, जब आत्मा तुझ पर आए, तो जो कुछ तुझे करने को मिले वही करना। और वैसे, वहाँ एक पलिश्ती चौकी है।

और मुझे लगता है कि सैमुअल दृढ़ता से सुझाव दे रहा था कि शाऊल को उस चौकी पर हमला करना चाहिए था। इसके बजाय, उसने ऐसा नहीं किया। वह ऊँचे स्थान पर पूजा करने गया, वास्तव में वह राजा नहीं बनना चाहता था, और बहुत झिझक रहा था।

और इसलिये कि पलिश्ती चौकी पर कभी आक्रमण न हो। लेकिन हम यहां 1 शमूएल 13 में पढ़ते हैं कि जोनाथन ने पलिश्ती चौकी पर हमला किया जो गेवा में थी। अब, कुछ लोग तर्क देंगे, खैर, पलिश्ती चौकी जिसका उल्लेख अध्याय 10 में किया गया था वह गिबा में थी।

तो शायद गेवा और गिबिया एक ही स्थान के वैकल्पिक नाम हैं। या कुछ लोग यहां गिबाह को पढ़ने के लिए पाठ को बदल देंगे। अन्य लोग कहेंगे, नहीं, गेवा एक नजदीकी स्थान है, लेकिन यह एक अलग साइट है।

मुझे लगता है कि भूगोल के बारे में तर्क शायद थोड़ा सा मुद्दा भूल गया है। मुद्दा यह है कि जोनाथन ने आसपास के पलिश्ती चौकी पर हमला किया। उसने वही किया जो शाऊल को करना चाहिए था।

और पलिश्तियों ने इसके विषय में सुना। और शाऊल ने तुरही फूंकी। और इस्राएल ने समाचार सुना, कि शाऊल ने पलिश्तियोंकी चौकी पर चढ़ाई कर दी है।

खैर, शाऊल ने वास्तव में ऐसा नहीं किया। उनके बेटे जोनाथन ने किया। और अब इस्राएल पलिश्तियों के लिये घृणित हो गया है।

और इसलिए, इस्राएलियों के बीच एक बड़ी चिंता है कि जोनाथन ने उन्हें यहाँ एक कठिन परिस्थिति में डाल दिया है। और लोगों को गिलगाल में शाऊल से मिलने के लिए बुलाया गया है। पलिश्ती सेना इकट्ठी हो रही है।

उनके पास रथ और सैनिक हैं जो समुद्र के किनारे की रेत के समान असंख्य हैं। फ़िलिस्ती सेना बहुत डरावनी है और इस्राएली सेना से श्रेष्ठ है। और इसलिए यह बहुत गंभीर स्थिति लगती है.

और शाऊल गिलगाल में रह गया है, और उसके संग की सारी सेना थरथरा रही है। वे भय से काँप रहे हैं, काँप रहे हैं। तो, शाऊल ने मूल रूप से खुद को उस स्थिति में पाया है जिसके बारे में सैमुअल ने अध्याय 10 में बात की थी।

याद रखें, मुझे लगता है, शमूएल चाहता था कि शाऊल पलिश्ती चौकी पर हमला करे और फिर गिलगाल जाकर सात दिन तक उसका इंतजार करे। और फिर वह आकर शाऊल को बताता कि उसे क्या करना है, एक बलिदान चढ़ाता, और फिर शाऊल को बताता कि उसे आगे क्या करना है। ऐसा कभी नहीं हुआ।

और इसलिए, आप सोच सकते हैं, ठीक है, यह तो बस बोर्ड द्वारा चला गया है। वह अब प्रासंगिक नहीं है. लेकिन नहीं, भले ही स्पष्ट रूप से कुछ समय बीत चुका है, शाऊल खुद को इस स्थिति में समझता है।

उसे एहसास हुआ कि पलिश्ती चौकी पर हमला किया गया था। मैं यहां गिलगाल में हूं। सैमुअल इसी स्थिति के बारे में बात कर रहा था।

मुझे लगता है कि जैसा कि मैंने कहा, सैमुअल का इरादा यह सब बहुत पहले घटित होने का था, लेकिन यहां हम इस स्थिति में हैं। तो, हम जानते हैं कि उसे सात दिनों तक इंतजार करना होगा, और वह ऐसा करता है। 1 शमूएल 13, 8 के अनुसार, उसने सात दिनों तक प्रतीक्षा की, जो शमूएल द्वारा निर्धारित समय था।

परन्तु शमूएल गिलगाल में न आया, और शाऊल के लोग तितर-बितर होने लगे। इसलिये शाऊल ने अपने आप से वा औरों से कहा, होमबलि और मेलबलि मेरे पास ले आओ। और शाऊल ने होमबलि चढ़ाया।

सैमुअल ने पहले कभी उसे ऐसा करने की इजाज़त नहीं दी थी. और क्या आप यह नहीं जानते, जैसे ही उसने भेंट देना समाप्त किया, सैमुएल विनम्रतापूर्वक शायद कुछ मिनटों की देरी से पहुंचा। शमूएल आया और शाऊल उसका स्वागत करने के लिए बाहर गया।

और शमूएल ने उस से पूछा, तू ने क्या किया है? और मुझे लगता है कि उन्होंने शायद इसे इसी तरह से कहा है। और शाऊल ने उत्तर दिया, अच्छा, जब मैं ने देखा कि वे लोग तितर-बितर हो रहे हैं, और तुम नियत समय पर नहीं आए, तो ध्यान दो कि वह शमूएल को यह कैसे बताता है, और पलिश्ती मिकमाश में इकट्ठे हो रहे थे, दूसरे शब्दों में, मेरे सैनिक जा रहे हैं , फ़िलिस्ती वास्तव में कमर कस रहे हैं, और आप यहाँ वैसे नहीं हैं जैसा आपने कहा था कि आप होंगे। मैं ने सोचा, अब पलिश्ती गिलगाल में मुझ पर चढ़ाई करेंगे, और मैं ने यहोवा की कृपा की आशा नहीं की।

यह बहुत पवित्र लगता है, लेकिन यह आज्ञाकारिता के बजाय अनुष्ठान और धर्म के प्रति शाऊल के जुनून को दर्शाता है। इसलिए, मुझे होमबलि चढ़ाने के लिए बाध्य महसूस हुआ। इसलिए, वह यहां अपने कार्यों को उचित ठहरा रहा है।

और मुझे लगता है कि हमें यहां इस बारे में थोड़ा और विस्तार से सोचना होगा क्योंकि शाऊल के रवैये के साथ कुछ वास्तविक समस्याएं हैं। मैं तीन के बारे में सोच सकता हूँ. शाऊल का दृष्टिकोण कम से कम तीन महत्वपूर्ण तरीकों से त्रुटिपूर्ण है।

आइए इस बारे में सोचें. सबसे पहले, अपनी घटती ताकतों को लेकर उनकी चिंता. वह क्या दर्शाता है? खैर, मुझे लगता है कि यह इंगित करता है कि वह वास्तव में विश्वास करता है कि भगवान नहीं, मानव सेनाएं लड़ाई का फैसला करती हैं।

यदि प्रभु आपके पक्ष में है तो इससे वास्तव में क्या फर्क पड़ता है कि आपके पास कितने सैनिक हैं? प्रभु ने अतीत में बहुत कम संख्या में जीतने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। वास्तव में, कभी-कभी वह इसे उसी तरह पसंद करता है, जैसा कि गिदोन को पता चला। और इसलिए, इससे पता चलता है कि शाऊल का भरोसा उस पर है जो वह देख सकता है न कि उस पर। दूसरे शब्दों में , शाऊल उस प्रकार का व्यक्ति है जो विश्वास के बजाय दृष्टि पर चलता है।

दूसरे, बलिदान देने के प्रति उनकी चिंता एक दोषपूर्ण धर्मशास्त्र को प्रकट करती है जो कर्मकांड को आज्ञाकारिता से ऊपर उठाता है। वह सोचता है कि उसे प्रभु का अनुग्रह तभी मिलेगा जब वह प्रभु को किसी प्रकार का बलिदान देगा। उसे प्रभु को प्रसन्न करने की आवश्यकता है।

उसे प्रभु का अनुग्रह प्राप्त करने की आवश्यकता है। शायद अंतर्निहित धारणा के साथ, जो अक्सर बुतपरस्त विश्वदृष्टि में मामला होता है, कि आप भगवान को आपको अनुग्रह प्रदान करने के लिए हेरफेर कर सकते हैं। यदि आप उसे सही चीज़ देते हैं, तो बदले में वह आपको वही देगा जो आप चाहते हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि शाऊल की सोच त्रुटिपूर्ण है। वह अनुष्ठान को आज्ञाकारिता से ऊपर उठाता है। और तीसरा, वह अपनी सीमा लांघता है।

वह राजा है, और वह भविष्यवक्ता शमूएल के अधिकार के अधीन है, जो प्रभु का प्रतिनिधित्व करता है, जो राष्ट्र के लिए मध्यस्थ है। और अध्याय 10 में शाऊल को दिए अपने निर्देशों में, शमूएल ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह बलिदान चढ़ाएगा। ऐसा कोई संकेत या निहितार्थ नहीं है कि सैमुअल के आगमन में देरी से अचानक शाऊल को ऐसा करने की अनुमति, अधिकार मिल जाता है।

और इसलिए, वह, कई तरीकों से, इस बिंदु पर भविष्यवक्ता पुजारी, सैमुअल के अधिकार को हड़प रहा है। तो, शाऊल ने जो किया है उसमें काफ़ी ग़लत है। और इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि श्लोक 13 में, शमूएल उससे कहता है, तुमने मूर्खतापूर्ण काम किया है।

जो आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी थी, उसका पालन तुम ने नहीं किया। यदि तू होता तो वह इस्राएल पर सदैव के लिये तेरा राज्य स्थापित कर देता। और कुछ लोगों को इससे समस्या है क्योंकि वे सोचते हैं, ठीक है, क्या परमेश्वर ने यह निर्णय नहीं दिया था कि दाऊद राजा होगा, कि राजा यहूदा से आएगा? मुझे लगता है कि हम इसमें सामंजस्य बिठा सकते हैं।

मुझे पूरा यकीन नहीं है कि उत्पत्ति 49 में पहले के अनुच्छेद को एक डिक्री के रूप में समझा जाएगा। मुझे लगता है कि ईश्वर बस संकेत दे रहा है कि क्या होगा। और मैं यहां शाऊल को दिए गए उसके बयान को अंकित मूल्य पर लेता हूं।

शाऊल का एक चिरस्थायी राजवंश हो सकता था। परमेश्वर, अपने पूर्वज्ञान में, जानता था कि ऐसा नहीं होगा, कि शाऊल विफल हो जाएगा, और ऐसा नहीं होगा। लेकिन मैं इसे अंकित मूल्य पर लेता हूं।

यह एक वैध कथन है. आपके पास एक ऐसा राज्य हो सकता था जो कायम रहे, एक राजवंश जो कायम रहे, लेकिन आपने अपने पाप के कारण उसे गँवा दिया है। उसने जो किया है उसके लिए यह थोड़ा कठोर दंड लग सकता है, लेकिन मैंने एक मिनट पहले ही यह दिखाने की कोशिश की थी कि कुछ अच्छे कारण हैं कि शाऊल ने यहां अपना वंश क्यों खो दिया।

उनके विश्वास की कमी, अनुष्ठान पर उनका गलत ध्यान, पैगंबर-पुजारी के प्रति सम्मान की कमी। परन्तु अब तुम्हारा राज्य कायम न रहेगा। यहोवा ने अपने मन के अनुसार एक मनुष्य ढूंढ़ लिया है, और उसे अपनी प्रजा पर प्रधान ठहराया है, क्योंकि तुम ने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया है।

और वैसे, यहाँ शासक शब्द नगीद है। यह मेलेक नहीं है. यह एक तरह से शाऊल को याद दिलाने जैसा है, राजा मेरे अधीन कार्य करता है।

वह वाइस-रीजेंट है. आपको बस वही नहीं करना है जो आप चाहते हैं। तुम मेरे अधिकार के अधीन हो और इसका अर्थ यह है कि पैगम्बर के भी अधिकार के अधीन हो।

तुम्हारा राज्य टिकने वाला नहीं है। आपका कोई वंश नहीं चलेगा। प्रभु ने अपने मन के अनुसार एक मनुष्य ढूंढ़ लिया है।

अच्छा, इसका क्या मतलब है? यह वस्तुतः उसके दिल के अनुसार एक आदमी है। और मुझे लगता है कि इसका मतलब है ऐसा व्यक्ति जिसका हृदय, जिसका दिमाग ईश्वर जो कर रहा है उसके अनुरूप है और जो ईश्वर की इच्छा को पूरा करना चाहता है। यह उनकी प्राथमिक चिंता है.

ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि शाऊल इसके बारे में भावुक है, लेकिन यह दूसरा व्यक्ति है, और निश्चित रूप से हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि यह डेविड है। दाऊद वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के हृदय के अनुसार है। इस बिंदु पर अभी तक इसका विशेष रूप से खुलासा नहीं किया गया है, लेकिन भगवान ने इस दूसरे को चुना है।

मुझे लगता है कि, वैसे, हमें अध्याय 14, श्लोक 7 में इस अभिव्यक्ति का क्या अर्थ है, इसकी थोड़ी जानकारी मिल गई है। हम इस अंश के बारे में यहां एक मिनट में थोड़ा और विस्तार से बात करने जा रहे हैं, लेकिन अध्याय 14 में, जैसा कि हम देखेंगे, जोनाथन रणनीति बना रहा है और वह पलिश्तियों पर हमला करना चाहता है। वह एक लड़ाई भड़काना और जीत हासिल करना चाहता है। और यह सिर्फ वह और उसका हथियार ढोने वाला है और पलिश्तियों के पास एक चौकी है।

उनके पास वहां ताकत है, लेकिन वह कहते हैं, हम यही करने जा रहे हैं। यदि वे हमें आकर उनसे लड़ने की चुनौती देते हैं, तो हम ऐसा करने जा रहे हैं। और हथियार ढोनेवाले ने योनातान से कहा, जो कुछ तेरे मन में हो वही कर, उसके हथियार ढोनेवाले ने कहा।

आगे बढ़ो। एनआईवी जिस तरह से इसका अनुवाद करता है , मैं दिल और आत्मा से आपके साथ हूं , लेकिन शाब्दिक रूप से यह है, देखो, मैं आपके दिल के अनुसार आपके साथ हूं। देखिए, यह वही अभिव्यक्ति है जिसका उपयोग अध्याय 13 में किया गया था, जहां मैंने एक आदमी को चुना है, भगवान ने एक आदमी को उसके दिल के अनुसार चुना है।

वह वह व्यक्ति है जो अपनी इच्छा के अनुरूप है। और कवचधारी क्या कह रहा है? वह कहता है, मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम्हारे हृदय के अनुसार, तुम जो चाहोगे, मैं करूंगा, मेरी इच्छा तुम्हारे अनुरूप है। और मैं आपके ढोल की थाप पर मार्च करता हूं।

और इसलिए, मुझे लगता है कि इससे हमें ठीक-ठीक यह पता चल जाता है कि अध्याय 13 में क्या कहा गया है। कुछ लोग कहते हैं कि अपने मन के अनुसार चलने वाले व्यक्ति का सीधा-सा अर्थ है वह व्यक्ति जिसे ईश्वर ने चुना है। इसमें इसके अलावा और भी बहुत कुछ है।

इसका मतलब है, भगवान किसी ऐसे व्यक्ति को चुनने जा रहा है जो उसकी इच्छा के अनुरूप है। यह कोई मनमाना विकल्प नहीं है जो बनाया जा रहा है। और वास्तव में, हमने पहले अधिनियमों के अनुच्छेद 13, श्लोक 21 का उल्लेख किया था, जो हमें सूचित करता है कि शाऊल ने 40 वर्षों तक शासन किया, लेकिन आप श्लोक 22 में देखते हैं, जैसा कि वे इस घटना को याद कर रहे हैं, शाऊल को हटाने के बाद, उसने डेविड को अपना बनाया राजा।

और परमेश्वर ने उसके विषय में गवाही दी, कि मैं ने यिशै के पुत्र दाऊद को अपने मन के अनुसार एक पुरूष पाया है। वह वह सब कुछ करेगा जो मैं उससे कराना चाहता हूं। देखिए, अधिनियमों के परिच्छेद में, हमें एक तरह से यह स्पष्टीकरण मिलता है कि आफ्टर माई हार्ट का क्या मतलब है।

यह सिर्फ वह नहीं है जिसे मैं चुनता हूं। यह, मैं एक ऐसे व्यक्ति को चुनने जा रहा हूं जो मेरी इच्छा के अनुरूप है। वह वह सब कुछ करेगा जो मैं उससे कराना चाहता हूं।

और इसलिए मुझे लगता है कि यहाँ अध्याय 13, श्लोक 14 में यही अभिप्राय है। वह एक ऐसे व्यक्ति को चुनने जा रहा है जो उसकी इच्छा के अनुरूप है और हर तरह से उसकी आज्ञा का पालन करना चाहता है। और निःसंदेह, डेविड वह व्यक्ति बनने जा रहा है।

शमूएल यह भी कहता है कि उसने उसे अपने लोगों का शासक नियुक्त किया है क्योंकि तुमने प्रभु की आज्ञा का पालन नहीं किया है। देखिए, यह सब प्रभु की इच्छा के बारे में है। शाऊल ने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया।

और इसलिए, भगवान ने इस दूसरे व्यक्ति को नागिद, शासक नियुक्त किया है। लेकिन यह दिलचस्प है कि हिब्रू में अपॉइंटमेंट शब्द का अनुवाद वास्तव में कमांड शब्द है। और मुझे लगता है कि नियुक्त एक अच्छा अनुवाद है, लेकिन यह लगभग वैसा ही है जैसे उसने एक औपचारिक आदेश जारी किया हो कि यह व्यक्ति शासक बनने जा रहा है।

उन्होंने ही उसकी नियुक्ति की है. और मुख्य बात यह है कि यह श्लोक 13 में शब्द कमांड पर एक नाटक है। आप इसे श्लोक 14 में अंग्रेजी में नहीं देखते हैं, लेकिन आप 13 में देखते हैं।

शमूएल ने शाऊल से कहा , तुमने मूर्खतापूर्ण काम किया है । जो आज्ञा तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दी थी, उसका पालन तुम ने नहीं किया। यदि तू होता तो वह इस्राएल पर सदैव के लिये तेरा राज्य स्थापित कर देता।

परन्तु अब तुम्हारा राज्य टिक न सकेगा। यहोवा ने अपने मन के अनुसार एक मनुष्य ढूंढ़ लिया है, और उसे अपनी प्रजा पर प्रभुता करने की आज्ञा दी है, क्योंकि तुम ने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया है। तो, वर्ड कमांड पर यह खेल है।

तुमने प्रभु की आज्ञा का पालन नहीं किया है। तो बताओ क्या? उन्होंने आदेश जारी कर दिया है कि आपकी जगह कोई और आने वाला है. वहां की विडंबना, शब्दों का खेल देखें? कभी-कभी इसे अनुवाद में लाना कठिन होता है, लेकिन यह हिब्रू पाठ में मौजूद है।

और तब शमूएल गिलगाल से निकलकर बिन्यामीन के गिबा को चला गया। और शाऊल ने अपने साथ के लोगों को गिना और उनकी संख्या लगभग 600 थी। इसलिए, अध्याय 13 और 14 के इस पहले प्रमुख खंड में, हम देखते हैं कि शाऊल ने अपने वंश को खो दिया।

और ऐसा हो सकता है. ईश्वर के पास लोगों के लिए महान योजनाएँ हो सकती हैं, लेकिन यह ईश्वर की ओर से केवल एकतरफा एकतरफा आदेश नहीं है। लोग मूर्खतापूर्वक प्रभु के वचन की अवज्ञा करके अपना विशेषाधिकार और अपना आशीर्वाद खो सकते हैं।

कहानी में पहले एली के साथ ऐसा हुआ था और यहाँ शाऊल के साथ भी ऐसा ही हो रहा है। इसे थोड़ा और स्पष्ट करने के लिए, हम कह सकते हैं कि प्रभु अपने चुने हुए शासकों से अपेक्षा करते हैं कि वे उनकी भविष्यसूचक आज्ञा का पालन करें। और नए नियम के विश्वासियों के लिए, प्रभु की भविष्यवाणी का आदेश धर्मग्रंथ है।

यह नए नियम के धर्मग्रंथ हैं जो प्रेरितों द्वारा लिखे गए हैं जो भविष्यवक्ता थे। और हम यह भी देखते हैं कि अवज्ञा के परिणामस्वरूप विशेषाधिकार और आशीर्वाद की हानि हो सकती है। और यह कई मायनों में बहुत दुखद है.

इसलिए, शाऊल ने अपना वंश खो दिया है। उन्हें अभी तक यह नहीं बताया गया है कि उन्हें राजा पद से हटाया जा रहा है, लेकिन उन्हें बताया गया है कि उनका राजवंश जारी नहीं रहेगा। यह हमें अध्याय 13 और 14 के अगले प्रमुख खंड में लाता है, जो अध्याय 13 श्लोक 16 से शुरू होगा, और 14.23 तक चलेगा। और फिर, जैसा कि मैंने पहले कहा, जोनाथन का विश्वास जीत की लौ जगाता है।

यहां सिद्धांत यह है कि भगवान की महान शक्ति में विश्वास उनके बचाव हस्तक्षेप के लिए उत्प्रेरक हो सकता है। और अध्याय 13 श्लोक 16 में, हम शाऊल और उसके पुत्र योनातान को पढ़ते हैं। अब, जोनाथन का उल्लेख पहले किया जा चुका है, और हम जानते हैं कि जोनाथन शाऊल का पुत्र है, लेकिन यहाँ पाठ विशेष रूप से उसे यही कहता है।

और मुझे लगता है कि इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित करने का एक उद्देश्य है कि वह उसका बेटा है, क्योंकि शाऊल ने अभी क्या खोया है? उनका वंश. और इसका प्रभाव उसके बेटे, जोनाथन पर पड़ता है। जैसे-जैसे अनुभाग आगे बढ़ेगा, हम इससे परेशान होते जाएंगे क्योंकि हमें पता चलेगा कि जोनाथन, अपने पिता के विपरीत, एक महान राजा होता।

उसके पास प्रभु में उस प्रकार का विश्वास है जैसा इस्राएल के राजा को होना चाहिए। और यही कारण है कि जोनाथन और प्रारंभिक डेविड, युवा डेविड, इतने अच्छे दोस्त बन गए। वे प्रभु के प्रति उस प्रतिबद्धता को साझा करते हैं।

और इसलिए, जब आप शाऊल और उसके बेटे, जोनाथन को पढ़ते हैं तो यह दुखद है, क्योंकि भविष्यवक्ता ने अभी जो कहा है उसका शाऊल के बेटे, जोनाथन पर प्रभाव पड़ता है। निःसंदेह, जोनाथन वही है जिसने पलिश्ती चौकी पर हमला किया था। हम यहां कुछ अंशों को छोड़ देंगे।

एक खंड है जो हमें बताता है कि इस समय हथियार उद्योग पर पलिश्तियों का एकाधिकार था। इसलिए, इस्राएली वास्तव में यहाँ नुकसान में हैं। पलिश्तियों के पास एक मजबूत सैन्य शक्ति है।

वे अच्छी तरह से सुसज्जित हैं. और हम 1 शमूएल 13, 22 में पढ़ते हैं, कि युद्ध के दिन शाऊल और योनातन के किसी भी सैनिक के हाथ में तलवार या भाला न था। केवल शाऊल और उसके पुत्र योनातन के पास वे थे।

इसलिए हम इस युद्ध में इज़राइली सेना से बहुत अधिक उम्मीद नहीं कर रहे हैं। लेकिन इस आसन्न युद्ध के संदर्भ में, हम अध्याय 14, श्लोक 1 पर आते हैं। एक दिन शाऊल के पुत्र योनातान ने, जब उन्हें इसकी याद दिलायी जा रही थी, अपने जवान हथियार ढोनेवाले से कहा, आओ, हम पलिश्तियों की चौकी पर चलें दूसरी ओर। लेकिन उसने अपने पिता को नहीं बताया.

शाऊल गिबा के बाहरी इलाके में रह रहा था। वह वहाँ वापस आ गया है. और वैसे, अध्याय 14, पद 3 के अनुसार शाऊल, अहिय्याह नाम का एक व्यक्ति है, जो एपोद पहने हुए था।

कौन है ये? खैर, वह एक पुजारी है. वह ईकाबोद के भाई का पुत्र था, अहीतूब, फिनीस का पुत्र, एली का पुत्र, जो शीलो में यहोवा का याजक था। किसी को पता नहीं था कि जोनाथन चला गया है।

यहां महत्व देखें? शाऊल के ठीक बगल में, जिसने अपना वंश खो दिया है, अचिया है, जो एली नामक पुजारी का वंशज है, जिसने अपना वंश खो दिया था। और हम जो देखते हैं, वह यह है कि, जैसा कि हम सैमुअल के माध्यम से पढ़ते हैं, कभी-कभी एली और शाऊल के बीच समानताएं होती हैं, वे व्यक्ति जिन्होंने प्रभु के प्रति सम्मान न दिखाने के कारण अपने वंश को खो दिया। वे एक तरह से साथ-साथ चलते हैं।

और वैसे भी, जोनाथन पलिश्तियों के साथ कुछ भड़काने के लिए इच्छुक और तैयार है। और पलिश्ती वहाँ ऊपर हैं। और जैसा योनातान ने अपके जवान हथियार ढोनेवाले से कहा, आओ, हम उन खतनारहित पुरूषोंकी चौकी के पास चलें।

शायद प्रभु हमारी ओर से कार्य करेंगे। जोनाथन इस बात से बहुत जुड़ा हुआ है कि प्रभु क्या कर रहा है, लेकिन वह ईश्वर की संप्रभुता को पहचानता है। वह संभवतः हिब्रू शब्द उलाई का उपयोग करता है।

शायद प्रभु हमारी ओर से कार्य करेंगे। हम कुछ भी अनुमान नहीं लगाने जा रहे हैं, लेकिन शायद वह ऐसा करेगा। प्रभु को बचाने में कोई बाधा नहीं डाल सकता, चाहे बहुत से हो या थोड़े से।

इसलिए उनका रवैया उनके पिता से अलग है. उनके पिता घटती ताकतों से चिंतित थे। उनके पिता इस बारे में सोच रहे थे कि आप क्या देखते हैं, न कि यह कि भगवान क्या कर सकते हैं।

जोनाथन बिल्कुल अलग है। उसने पलिश्तियों को वहाँ देखा, और कहा, आओ, वहाँ चलें। आइए इन लोगों के साथ कुछ शुरू करें।

शायद प्रभु हमारे पक्ष में कार्य करेंगे। हम निश्चित नहीं हो सकते, लेकिन चलिए इसे करते हैं। क्योंकि प्रभु को कोई रोक नहीं सकता।

बस मामले में, कवच वाहक, आप कहना चाहते थे, लेकिन हम में से केवल दो हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता. प्रभु बहुतों को बचा सकते हैं।

प्रभु थोड़े से ही बचा सकते हैं। तो, कवच-वाहक, उसके श्रेय के लिए, हमने पहले इस मार्ग को देखा, वह सब करें जो आपके मन में है, उसके कवच-वाहक ने कहा। आगे बढ़ो।

मैं हृदय और आत्मा से आपके साथ हूं। वस्तुतः मैं आपके हृदय के अनुसार आपके साथ हूं। आपकी इच्छा ही मेरी इच्छा है.

हम इस पर एक हैं. और इसलिए, जोनाथन ने कहा, चलो, हम उनकी ओर बढ़ेंगे और उन्हें हमें देखने देंगे। तो, हम उपस्थित होने जा रहे हैं।

हम बाहर निकलने वाले हैं. हम नजर आने वाले हैं. और यदि वे हम से कहें, कि जब तक हम तुम्हारे पास न आएं, तब तक वहीं ठहरो, तो हम जहां हैं वहीं ठहरेंगे, और उनके पास न जाएंगे।

यह लगभग वैसा ही है जैसे जोनाथन इसे स्थापित कर रहा है क्योंकि किसी न किसी तरह से लड़ाई होने वाली है। यदि वे कहते हैं, रुको, हम नीचे आ रहे हैं, तो हम उनकी प्रतीक्षा करेंगे। लेकिन अगर वे कहते हैं, हमारे पास आओ, तो अब आप इस बिंदु पर सोच रहे होंगे, ठीक है, अगर जोनाथन को वहां तक चढ़ना पड़ा जहां वे हैं तो उसे भारी नुकसान होगा।

तो शायद वह कहने जा रहा है, ठीक है, अगर वे कहते हैं कि हम आपके पास आए हैं, तो हम रुकेंगे और लड़ेंगे। लेकिन अगर वे कहते हैं कि ऊपर चढ़ो, ठीक है, तो हमें पता चल जाएगा कि भगवान इसमें नहीं हैं और हम पीछे हट जाएंगे क्योंकि चट्टान पर चढ़ने की कोशिश करना और फिर उन्हें वहां हमारा इंतजार कराना वास्तव में बेवकूफी होगी। परन्तु यदि वे कहें कि हमारे पास आओ, तो हम चढ़ेंगे, क्योंकि यह हमारा चिन्ह होगा, कि यहोवा ने उन्हें हमारे हाथ में कर दिया है।

मेरा मतलब है, क्या यह बढ़िया नहीं है? मेरा मतलब है, जोनाथन मूल रूप से कह रहा है कि अगर यह असंभव लगता है, कवच-वाहक, यह एक संकेत होगा कि इसमें भगवान हैं क्योंकि

अगर वे हमें चुनौती देते हैं, तो भगवान हमें एक बड़ी जीत देंगे। अत: वे दोनों पलिश्ती चौकी के सामने प्रकट हुए। देखो, पलिश्तियों ने कहा, हिब्रू, पुराने नियम में अक्सर जब विदेशी इस्राएलियों का उल्लेख करते हैं, तो वे उन्हें हिब्रू कहते हैं।

इब्री लोग उन गड्ढों से बाहर निकल रहे हैं जिनमें वे छिपे हुए थे। हमें पहले बताया गया था कि बहुत से इस्राएली इतने डरे हुए थे कि वे तब तक गड्ढों में छिपते रहे जब तक कि शायद यह सब खत्म न हो जाए। चौकी के लोगों ने योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले को चिल्लाकर कहा, हमारे पास आओ और हम तुम्हें सबक सिखाएंगे।

तो, संकेत पूरा हो गया है. और योनातान ने अपके हथियार ढोनेवाले से कहा, मेरे पीछे पीछे चढ़। यहोवा ने उन्हें इस्राएल के हाथ में कर दिया है।

और ध्यान दें जोनाथन खुद को इज़राइल के एजेंट के रूप में देखता है। यह सिर्फ दिखावा नहीं है, जोनाथन हीरो बनने की कोशिश कर रहा है या ऐसा कुछ, बहुत अधिक टेस्टोस्टेरोन या ऐसा कुछ। वह खुद को इजराइल के एजेंट के तौर पर देखता है.

और इसीलिए मुझे लगता है कि वह इतना आश्वस्त है। वह सिर्फ जोनाथन या जोनाथन की महिमा के लिए नहीं लड़ रहा है। वह भगवान के लोगों के लिए लड़ रहा है.

और वह समझता है कि प्रभु अपने लोगों की रक्षा करना चाहता है। और भाषा पर ध्यान दें, जिस तरह से इसका अनुवाद किया गया है, उसने उन्हें दिया है। हिब्रू पाठ में, जिस क्रिया रूप का उपयोग किया जाता है वह वक्ता के दृष्टिकोण से पूर्ण कार्रवाई को इंगित करता है।

इसे कभी-कभी भविष्यसूचक परिपूर्ण भी कहा जाता है। मैं इसे निश्चितता की पूर्णता कहना पसंद करता हूँ। कभी-कभी अलंकारिक प्रभाव के लिए, वक्ता क्रिया रूप का उपयोग करेंगे।

ऐसा लगता है मानो यह पहले ही हो चुका है। यह उतना ही अच्छा है जितना किया गया। और इसलिए, ध्यान दें कि प्रभु ने पहले ही उन्हें इस्राएल के हाथ में दे दिया है।

और इसलिए, वह उस जीत की आशा कर रहा है जो इस सब के सामने आने पर इज़राइल को अनुभव होगी। और इसलिए, जोनाथन अपने हाथों और पैरों का उपयोग करके ऊपर चढ़ जाता है। हाँ, आप ऐसा करेंगे।

लेकिन ध्यान दें कि उसे उठने के लिए अपने हाथों और पैरों का उपयोग करना होगा। यह इतनी खड़ी है. और उसके हथियार ढोनेवाले को ठीक उसके पीछे रखते हुए, पलिश्ती योनातान के सामने गिर पड़े।

और उसका हथियार ढोनेवाला उसके पीछे हो लिया, और उसके पीछे मार डाला। तो मैं जो तस्वीर देख रहा हूं वह यह है कि जोनाथन आगे बढ़ रहा है और वह पलिश्तियों और उनके साथ आने वाले हथियार ढोने वालों पर हमला कर रहा है और उन्हें खत्म कर रहा है। उस पहले हमले

में, जोनाथन और उसके कवच-वाहक ने लगभग आधे एकड़ क्षेत्र में लगभग 20 लोगों को मार डाला।

और तब सारी सेना में, छावनी और मैदान में, और चौकियों और छापा मारनेवाले दलों में, भय व्याप्त हो गया। और ज़मीन हिल गयी. इससे पहले, इस्राएली काँप रहे थे और काँप रहे थे।

अब पलिश्ती ही डरे हुए हैं। और यह भगवान द्वारा भेजी गई घबराहट थी। तो जोनाथन समझता है कि यहाँ क्या हो रहा है।

और उसे एहसास होता है कि यह वास्तव में प्रभु की लड़ाई है। और उसने जीत की अलख जगा दी है. और दुश्मन पहले से ही पूरी तरह दहशत में है।

और इसलिए आप इज़राइली सेना से अपेक्षा करेंगे, जब वे इसे देखेंगे, तो कहेंगे, अरे, यहाँ कुछ हो रहा है। प्रभु काम पर हैं. आइए हमला करें.

गिबा ने कहा, और शाऊल के पहरूए ने सेना को सभी दिशाओं में पिघलते देखा। तब शाऊल ने अपने सायोंसे कहा, सेना इकट्ठी करके देखो, कि हम को कौन छोड़ गया है। अवश्य ही कोई नीचे गया होगा और कुछ शुरू किया होगा।

और जब उन्होंने ऐसा किया, तो योनातान और उसका हथियार ढोनेवाला वहां नहीं थे। इसलिए, जब वे पंक्तिबद्ध हुए और रोल कॉल किया, तो कोई जोनाथन नहीं, कोई कवच वाहक नहीं था। और शाऊल ने अखिया से कहा, परमेश्वर का सन्दूक ले आ।

याद रखें, अचिया एली नामक पुजारी का वंशज है जो पवित्र चीज़ों के लिए ज़िम्मेदार है। और उस समय, यह इस्राएलियों के साथ था. ठीक है।

यहां एक समस्या है क्योंकि इस समय प्रभु का सन्दूक, अन्य अनुच्छेदों के हमारे अध्ययन के आधार पर, कुछ दूरी पर है। 1 शमूएल 7:2 के अनुसार, यह संभवतः किर्यत जेरीम में छह मील दूर था। और जाने और सन्दूक को लाने और लाने में थोड़ा समय लगेगा। और शायद यहां इफोद या इपोद पढ़ना बेहतर है।

सेप्टुआजेंट में यही है। जोसीफ़स के पास भी वह वाचन है। वह बाइबिल अनुवाद इसके साथ चला गया।

एक पुजारी के लिए एपोद रखना अधिक सार्थक होगा। और एपोद वह है जिसका उपयोग आप परमेश्वर से संदेश प्राप्त करने के लिए करते हैं। यह एक तरह से एक परिधान की तरह है जिसे वे इन उद्देश्यों के लिए उपयोग करेंगे।

और इसलिए, भगवान का सन्दूक एक माध्यमिक पाठन हो सकता है, एक गलत व्याख्या जो हिब्रू पाठ में शामिल हो गई है। मुझे लगता है कि हमारे लिए यहां पढ़ने वाले एपोद के साथ जाना बेहतर होगा। यह बेहतर समझ में आता है, खासकर लाने वाली क्रिया के साथ।

और फिर अगले श्लोक में हम अपना हाथ हटाने के बारे में बात कर रहे हैं। तो शाऊल याजक से बात कर रहा है। श्लोक 19 के अनुसार पलिश्ती शिविर में कोलाहल अधिकाधिक बढ़ता जा रहा है।

तब शाऊल ने याजक से कहा, अपना हाथ हटा ले। लेकिन क्या आप देख रहे हैं कि यहां क्या हो रहा है? जोनाथन ने इस लड़ाई को प्रज्वलित किया है। फ़िलिस्ती पूरी तरह दहशत में हैं।

यह ईश्वर की ओर से भेजी गई घबराहट है। शाऊल ने इसे देखा। और इससे पहले कि वह हमला करने को तैयार हो, उसे धार्मिक अनुष्ठान करना होगा।

उसे सन्दूक या शायद एपोद के साथ कुछ करना होगा। हमें भगवान से एक शब्द प्राप्त करना होगा, अचिया, यह पता लगाने के लिए कि क्या भगवान हम पर हमला करना चाहते हैं या कुछ और।

लेकिन पलिश्तियों का आतंक इतना बढ़ गया है कि शाऊल ने अंततः इसे बंद कर दिया। परन्तु यह शाऊल की बहुत विशेषता है। आध्यात्मिक संवेदनशीलता और आज्ञाकारिता से पहले अनुष्ठान.

इसलिए, शाऊल और उसके सभी लोग इकट्ठे हुए, और उन्होंने पलिश्तियों को पूरी तरह से भ्रमित पाया, श्लोक 20 के अनुसार, एक दूसरे को अपनी तलवारों से मार रहे थे। कुछ इब्री जो डर गए थे, वे आकर इस्राएली सेना में शामिल हो गए, और इस्राएलियों ने जीत हासिल की एक महान युद्ध. और श्लोक 23 में हम पढ़ते हैं, उस दिन, प्रभु ने इस्राएल को बचाया।

और फिर लड़ाई बेथ-एवन से आगे बढ़ गई। तो, यह यहां दूसरा प्रमुख खंड है, जहां विश्वास जीत की अलख जगाता है। जोनाथन का विश्वास इस जीत को प्रज्वलित करता है।

और हमें याद दिलाया जाता है कि यह प्रभु ही है जो जीत का स्रोत है। यह सेनाओं में नहीं है, यह अनुष्ठान में नहीं है। और इसलिए, भगवान की महान शक्ति में विश्वास उनके बचाव हस्तक्षेप के लिए उत्प्रेरक हो सकता है।

यह जोनाथन का विश्वास ही है जो प्रभु यहां जो कुछ भी करता है उसके लिए उत्प्रेरक है। और प्रभु एक अजेय योद्धा है और बहुतों के द्वारा या कुछ के द्वारा उद्धार कर सकता है। और यह जोनाथन का एक महान कथन है जो परंपरा में कहीं और दिखाई देता है।

इस विषय की मेरी पसंदीदा अभिव्यक्तियों में से एक विहित ग्रंथों में नहीं है, कम से कम जैसा कि हम प्रोटेस्टेंट उन्हें देखते हैं। यह 1 मैकाबीज़ की किताब में है। मैकाबीस बता रहे हैं कि ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में जुडास मैकाबीस कैसे शक्तिशाली सीरियाई सेना का सामना करने के लिए एक छोटी सी सेना का नेतृत्व कर रहे हैं।

और उसके आदमी पूछते हैं, हम जैसे थोड़े से लोग, इतनी बड़ी और ताकतवर भीड़ के खिलाफ कैसे लड़ सकते हैं? 1 मैकाबीज़ 3.17. और यहूदा ने इस प्रकार उत्तर दिया, बहुतों के लिए कुछ लोगों द्वारा घेरा जाना आसान है, क्योंकि स्वर्ग की दृष्टि में बहुतों द्वारा या कुछ लोगों द्वारा बचाने के बीच कोई अंतर नहीं है। युद्ध में जीत सेना के आकार पर निर्भर नहीं करती, बल्कि ताकत स्वर्ग से आती है। और फिर यहूदा ने सीरियाई लोगों पर हमला किया और उन्हें हरा दिया।

यहूदा मैकाबियस द्वारा व्यक्त की गई भावना उस चीज़ में निहित है जिसे हम यहां 1 शमूएल 14 के इस अंश में देखते हैं जहां जोनाथन ने पलिश्ती सेना पर यह महान जीत हासिल की क्योंकि वह मानता है कि यह प्रभु के साथ संख्याओं के बारे में नहीं है। यदि प्रभु आपके साथ है, तो आप अपने शत्रु से अधिक शक्तिशाली हैं। और यह इस प्रकरण का दूसरा प्रमुख भाग है।

तीसरा उतना रोमांचक और खुशनुमा नहीं है। इसका अध्याय 14 श्लोक 24 से 52 तक है, जिसे मैं शाऊल कहता हूं जो जीत को कमजोर करता है। और हम यहां जो देखते हैं वह यह है कि अपने स्वयं के सम्मान के प्रति चिंता ईश्वरीय आशीर्वाद को कमजोर कर सकती है।

शाऊल देखता है कि क्या हो रहा है और उसने फैसला किया, हाँ, हमें वास्तव में इन पलिश्तियों का पीछा करना होगा और आज इस जीत को अंतिम रूप देना होगा। और वह कुछ बहुत ही मूर्खतापूर्ण कार्य करता है। फिर, यह किस प्रकार की अंतर्निहित मानसिकता को दर्शाता है कि हम जो करते हैं वह सबसे महत्वपूर्ण है।

यदि हम उत्साह के साथ युद्ध में नहीं उतरेंगे तो हम जीत नहीं पायेंगे। उस दिन इस्राएली संकट में पड़े, क्योंकि शाऊल ने लोगों को यह शपथ खिलाकर बन्धाया, कि शापित हो वह कोई, जो सांझ होने से पहिले कुछ खाए, जब तक कि मैं अपने शत्रुओं से पलटा न लूं। अतः किसी भी सैनिक ने भोजन का स्वाद नहीं चखा।

क्या आप देख रहे हैं कि शाऊल यहाँ क्या कह रहा है कि हम खाना नहीं खाएँगे। जब तक मैं अपने शत्रुओं से प्रतिशोध नहीं ले लेता, तब तक हम प्रत्येक पलिश्ती का सफाया न होने तक भोजन न करने के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध करने जा रहे हैं। वह स्पष्ट रूप से यहां व्यक्तिगत प्रतिशोध या ऐसा ही कुछ देख रहा है।

जोनाथन से बिल्कुल अलग. याद रखें, जोनाथन को एहसास हुआ कि अगर वे हमें असंभव को पूरा करने के लिए वहां आमंत्रित करते हैं, तो हम जान लेंगे कि प्रभु इसराइल को बचाने जा रहे हैं। जोनाथन समझता है कि यह सब प्रभु के बारे में है।

और यह विरोधाभास जो मैं जोनाथन और शाऊल के बीच विकसित कर रहा हूं वह वास्तव में महत्वपूर्ण है। जोनाथन को हम साहित्यिक कार्यों में फ़ॉइल कहते हैं। फ़ॉइल, एक ऐसा पात्र है जो किसी अन्य पात्र के साथ विरोधाभास के प्रयोजनों के लिए मौजूद होता है।

और यह एक तरह से दुखद है क्योंकि जोनाथन एक महान राजा होता। वह शाऊल के बाद राजा बनने की कतार में अगला होता। और अंततः वह एक प्रकार से एक विषम परिस्थिति में सिमट कर रह जाता है।

कहानी में, वह हमें दिखाता है कि शाऊल को क्या होना चाहिए था और मेरा मानना है कि अगर उसने अपने बेटे जोनाथन की तरह प्रभु पर भरोसा किया होता तो उसे ऐसा होना चाहिए था। लेकिन उससे कोई मदद नहीं मिली. तो कहानी में मुख्य रूप से, जोनाथन हमें यह समझने में मदद करने के लिए मौजूद है कि शाऊल कितना बुरा है।

यह विरोधाभास है. यदि आप विषमताओं और वे कैसे काम करते हैं, के संदर्भ में सोचते हैं, तो योना की किताब, योना की किताब में नाविकों को याद करें, जब वे तूफान में भगवान का सामना करते हैं, तो वे भगवान से डरते हैं। और जब वे बलिदान दे रहे होते हैं तो वे वह सब करने के लिए बहुत इच्छुक होते हैं जो प्रभु उनसे करवाना चाहते हैं।

और वे बड़े भय से प्रभु का भय मानते हैं, पाठ कहता है। योना के विपरीत, जो वास्तव में प्रभु से नहीं डरता। जब यहोवा कहता है, मैं चाहता हूं कि तुम नीनवे को जाओ और उनके विरुद्ध प्रचार करो, तो योना क्या करता है? वह विपरीत दिशा में चला जाता है.

इसलिए नहीं कि वह आवश्यक रूप से डरता है, बल्कि इसलिए कि वह नीनवे के लोगों से नफरत करता है और उनके पुनर्ग्रहण का हिस्सा नहीं बनना चाहता। परन्तु उसका उद्देश्य जो भी हो, वह प्रभु की अवज्ञा करता है। नाविक मूर्ख हैं।

वे दिखाते हैं कि जब प्रभु अपनी इच्छा आप पर प्रकट करते हैं तो आपको उन्हें उचित तरीके से कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए। बाद में, नीनवे का राजा एक विषम परिस्थिति में है। जब वह योना का संदेश सुनता है तो वह ठीक से प्रतिक्रिया देता है।

वह पछताता है. योना बस वहीं बैठता है और मुंह फुलाता है और शिकायत करता है। तो, फ़ॉइल एक ऐसा चरित्र है जो विरोधाभास के प्रयोजनों के लिए होता है।

नाविक योना के लिए मुसीबत हैं। रूथ की पुस्तक में, ओर्पा रूथ के लिए एक विषम परिस्थिति है। जब लड़कियाँ नाओमी के साथ वापस जा रही होती हैं, तो नाओमी कहती है, तुम मेरे साथ आगे नहीं रहना चाहती।

मैं भविष्य में आपकी कोई मदद नहीं कर सकता. निःसंदेह वह बहुत अदूरदर्शी है। ओर्पा वापस चला जाता है और रूथ रुक जाती है।

और ऐसा उस मामले में नहीं है, ऐसा नहीं है कि ओर्पा एक बुरा व्यक्ति है क्योंकि नाओमी ने उसे आशीर्वाद दिया है। उसने कहा, तुम मेरे प्रति विश्वासयोग्य रहे हो, और प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दे। लेकिन नाओमी का तर्क मुझे विश्वास दिलाता है, ओर्पा कि, हाँ, इज़राइल में मेरे लिए कोई भविष्य नहीं है।

तो, मुझे घर जाना होगा। ओर्पा वही करता है जिसकी आप अपेक्षा करते हैं। यदि ओर्पा अच्छा है, तो रूत अच्छा नहीं है।

वह बहुत अच्छी है। और वह नाओमी के साथ रहती है. तो ओर्पा रूत के लिए एक विषम परिस्थिति है।

कभी-कभी फ़ॉइल नकारात्मक, सकारात्मक या बीच में हो सकती है। और इसलिए, जोनाथन यहाँ शाऊल के लिए एक विषम परिस्थिति है। इसलिए शाऊल ने मूलतः श्राप को नीचे बुलाया है।

वह मूल रूप से ईश्वर से उस व्यक्ति का न्याय करने के लिए कह रहा है जो शाऊल द्वारा पलिश्तियों से प्रतिशोध लेने से पहले खाता है। इसलिए किसी भी सैनिक ने भोजन का स्वाद नहीं चखा। श्लोक 25 के अनुसार, पूरी सेना जंगल में प्रवेश करती है, और जमीन पर शहद है।

वे मधु को बहते हुए देखते हैं, परन्तु शपथ के भय के कारण कोई अपना हाथ मुंह तक नहीं रखता। हम नहीं खा सकते. जोनाथन ने इस बारे में नहीं सुना था।

वह अपना काम करना बंद कर रहा है। योनातान ने यह नहीं सुना था कि उसके पिता ने लोगों को शपथ से बाँधा है। और इसलिए, वह ऊपर आता है, और आप चाहते हैं कि किसी ने उससे कहा होता, नहीं, नहीं, जोनाथन, ऐसा मत करो।

परन्तु इसके बजाय, उसने अपनी छड़ी का अंत जो उसके हाथ में था, बढ़ाया और उसे छत्ते में डुबा दिया। और उसने अपना हाथ अपने मुँह की ओर बढ़ाया, और उसकी आँखें चमक उठीं। इस प्राकृतिक शहद ने उसे उत्साहित कर दिया।

इससे उन्हें नई ऊर्जा मिली। और फिर सैनिकों में से एक ने उससे कहा, तुम्हें पता है, फिर, बाद के बजाय पहले क्यों नहीं? तुम्हारे पिता ने सेना को यह कहकर कड़ी शपथ खिलाई, शापित हो कि जो कोई आज भोजन करे। और इसीलिए पुरुष मूर्च्छित हैं।

और योनातान यह सुन कर कहता है, मेरे पिता ने देश के लिये विपत्ति खड़ी कर दी है। देखिये जब मैंने इस शहद का थोड़ा सा स्वाद चखा तो मेरी आँखें कैसे चमक उठीं? हमें यहां कुछ ऊर्जा की आवश्यकता है। कितना अच्छा होता यदि वे लोग अपने शत्रुओं से लूटी हुई लूट में से कुछ खा लेते? क्या पलिश्तियों का संहार और भी अधिक नहीं हुआ होगा? तो जोनाथन एक महान विश्वासी व्यक्ति है जिसने पलिश्तियों से लड़ने के लिए चट्टान पर चढ़ाई की, केवल वह और उसका हथियार ढोने वाला।

वह भगवान पर भरोसा रखता है, लेकिन वह एक व्यावहारिक व्यक्ति भी है। और उसे एहसास हुआ, हाँ, अगर हम पलिश्तियों का पीछा करने जा रहे हैं, तो हमें कुछ ताकत की ज़रूरत है। आखिर मेरे पिता ऐसा क्यों करेंगे? उस दिन जब इस्राएलियोंने मिकमाश से अय्यालोन तक पलिश्तियोंको मार डाला, तब वे थक गए।

और अंततः, वे टूट जाते हैं, वे टूट जाते हैं। वे लूट पर टूट पड़े। इसलिए, उन्होंने कड़ा संघर्ष किया है और इस समय उन्हें बस भोजन की आवश्यकता है।

वे भूखे मर रहे हैं. और उन्होंने भेड़-बकरी, गाय-बैल, और बछड़े लेकर उनको भूमि पर काट डाला, और लोहू समेत खा लिया। अब वे अनुष्ठानिक शुद्धता के पुराने नियम के नियम का उल्लंघन कर रहे हैं।

वे खून के साथ-साथ मांस भी खा रहे हैं। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए. और इसलिए, शाऊल की मूर्खतापूर्ण शपथ उसके लोगों को ले आई है, मेरा मतलब है, वे अभी भी अपने व्यवहार के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन इसने लोगों को इस स्थिति में ला दिया है, उस बिंदु पर जहां वे प्रभु की अवज्ञा कर रहे हैं।

शाऊल इसके लिए उत्प्रेरक था। तब किसी ने शाऊल से कहा, सुन, वे मनुष्य लोहू मिला हुआ मांस खाकर यहोवा के विरूद्ध पाप करते हैं। उन्होंने कहा, आपने विश्वास तोड़ा है।

यहाँ पर तुरंत एक बड़ा पत्थर लुढ़काओ। अनुष्ठान और इस सब के प्रति शाऊल का जुनून देखें। तब उस ने कहा, मनुष्यों के बीच में जाकर उन से कहो, तुम में से हर एक अपना अपना गाय-बैल और भेड़-बकरी मेरे पास ले आओ, और यहीं उनका वध करके खाओ।

खून लगा हुआ मांस खाकर प्रभु के विरुद्ध पाप मत करो। इसलिए, हम मांस खाने से पहले खून निकाल देंगे। इसलिये उस रात सब लोग अपना बैल ले आए और वहीं उसका वध किया।

तब शाऊल ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई। यह पहली बार था जब उसने ऐसा किया था। तब शाऊल ने कहा, आओ हम रात को पलिश्तियों का पीछा करें, और भोर तक उन्हें लूटें, और उन में से एक को भी जीवित न छोड़ें।

उस पर अभी भी पलिश्तियों का सफाया करने का जुनून सवार है। हम जानते हैं कि इसकी प्रेरणा क्या है, पलिश्तियों से बदला लेने की उसकी इच्छा, जिसके बारे में मुझे यकीन है कि उसने उसे बहुत अपमानित किया था। मैं संभवतः शाऊल के समय में इस्राएलियों को यह कहते हुए सुन सकता था, शाऊल इन लोगों को कैसे नहीं हराता? और इसलिए, यह उसका अवसर है।

उन्होंने उत्तर दिया, जो तुम्हें सबसे अच्छा लगे वही करो। लेकिन पुजारी ने कहा, चलो यहीं भगवान से पूछ लेते हैं। तो, शाऊल ने पूछा, शाऊल हमेशा इस तरह की चीज़ के लिए तैयार रहता है।

इसलिये शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, क्या मैं जाकर पलिश्तियों का पीछा करूं? क्या तू उन्हें इस्राएल के हाथ में सौंप देगा? परन्तु परमेश्वर ने उस दिन उसे उत्तर नहीं दिया। शाऊल ने कहा, हे सब सेना के सरदारों, यहां आओ, और हम जानें कि आज क्या पाप हुआ है। शायद उसके मन में, ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने कृत्यों के कारण पाप किया है।

इस्राएल के छुड़ानेवाले यहोवा के जीवन की शपथ, चाहे दोष मेरे पुत्र योनातान का हो, तौभी वह अवश्य मरेगा। और इस बिंदु पर शाऊल को, मुझे नहीं लगता कि उसे एहसास है कि जोनाथन ने क्या किया था, लेकिन उनमें से किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। इसलिए, इससे पहले कि हम

फ़िलिस्तियों का पीछा करें, हमें यह पता लगाना होगा कि प्रभु हमारे अनुरोध का उत्तर क्यों नहीं दे रहे हैं।

तब शाऊल ने सब इस्राएलियोंसे कहा, तुम लोग वहीं खड़े रहो, मैं और मेरा पुत्र योनातान इधर खड़े रहेंगे। उन्होंने उत्तर दिया, जो तुम्हें सबसे अच्छा लगे वही करो। तब शाऊल ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की।

तुमने आज अपने सेवक को उत्तर क्यों नहीं दिया? यदि दोष मुझमें या मेरे पुत्र जोनाथन में है, तो उरीम से उत्तर दो। परन्तु यदि इस्राएल के पुरूष दोषी हों, तो तुम्मीम से उत्तर दो। आपको उरीम और तुम्मीम याद है, जो एक उपकरण था जिसका उपयोग इस्राएलियों द्वारा ईश्वर की इच्छा निर्धारित करने और इस तरह की स्थितियों में उत्तर पाने के लिए किया जाता था।

तो, आप जानते हैं, मैंने उन्हें एक बैग में होने की कल्पना की थी और यदि आप उरीम चिह्नित एक को बाहर खींचते हैं, तो इसका मतलब है पार्टी ए। यदि आप दूसरे को बाहर निकालते हैं, तो इसका मतलब है कि पार्टी बी। जोनाथन और शाऊल को बहुत से लोग ले गए थे साफ़ कर दिए गए. शाऊल ने कहा, मेरे और मेरे पुत्र योनातान के बीच चिट्ठी डालो। और जोनाथन को पकड़ लिया गया।

तब शाऊल ने योनातन से कहा, मुझे बता कि तू ने क्या किया है। योनातान ने उस से कहा, मैं ने अपनी लाठी के सिरे से थोड़ा सा मधु चख लिया, और अब मैं मर जाऊंगा। और यहां थोड़ी अनिश्चितता है कि जोनाथन के बयान का लहजा क्या है।

शायद व्यंग्यात्मक. और अब मुझे उसके लिए मरना होगा? और शाऊल ने कहा, हे योनातान, यदि तू न मरे, तो परमेश्वर मुझ से चाहे चाहे कठिन ही व्यवहार करे; इसलिए, यदि शाऊल अपने ही बेटे को उस मूर्खतापूर्ण, मूर्खतापूर्ण प्रतिज्ञा का उल्लंघन करने के लिए नहीं मारता है जो उसने सेना से ली थी जिसके बारे में जोनाथन को पता नहीं था, तो वह स्वयं को श्राप देता है।

परन्तु ध्यान दीजिए कि पद 45 में यहाँ क्या होता है। उन लोगों ने शाऊल से कहा, क्या योनातान को मरना चाहिए? वह कौन है जिसने इसराइल में यह महान उद्धार लाया है? कभी नहीं। निश्चय ही प्रभु के जीवन की शपथ, उसका एक बाल भी भूमि पर नहीं गिरेगा क्योंकि उसने आज यह कार्य ईश्वर की सहायता से किया है।

वे समझते हैं कि क्या हुआ है और वे शाऊल को उस दिन के नायक को मार डालने नहीं देंगे। इसलिए, उन लोगों ने जोनाथन को बचा लिया और उसे मौत की सजा नहीं दी गई। और इसलिए आप इसे पढ़ सकते हैं कि जैसे ही उन्होंने प्रवेश किया और शाऊल को उसे मारने नहीं दिया।

लेकिन हिब्रू पाठ में, यह बचाने या बचाव के लिए अधिक सामान्य शब्दों में से एक नहीं है, यह पद है। और पदा का अर्थ कभी-कभी केवल बचाव या उद्धार ही हो सकता है, लेकिन इसका अर्थ छुड़ाना, किसी के लिए कीमत चुकाना भी हो सकता है। और इसलिए, यहां एक सिद्धांत यह है कि पुरुषों ने न केवल अंदर आकर शाऊल को जोनाथन को मारने से रोका, बल्कि उन्होंने एक

संग्रह लिया और मूल रूप से फिरौती की कीमत का भुगतान किया, जो आप इस प्रकार की स्थितियों में टूटी हुई शपथ और टूटी प्रतिज्ञाओं के साथ कर सकते हैं।

इस सब के दौरान भगवान एक तरह से चुप हैं। लेकिन यह बहुत, बहुत दुखद है क्योंकि यह हमें इतिहास की एक पुरानी घटना की याद दिलाता है, जजों की किताब में, जहां यिप्तह बाहर जाकर दुश्मन से लड़ने के लिए तैयार हो रहा था। और उसने अपना मामला प्रस्तुत किया और प्रदर्शित किया कि वह सही था और दुश्मन गलत था।

यह न्यायाधीशों के अध्याय 10 और 11 में है। और फिर, अपना मामला प्रस्तुत करने और इसे न्यायाधीश के रूप में प्रभु को सौंपने के बाद, वह पीछे मुड़ता है और प्रभु से कहता है, वैसे, हे प्रभु, यदि आप मुझे आगामी जीत दिलाते हैं युद्ध करो, मैं तुम्हें मानव बलि दूँगा। उसे इस बात का जरा भी अहसास नहीं था कि यह उसकी अपनी बेटी होने वाली है।

मुझे लगता है कि उसने शायद किसी और की कल्पना की है, लेकिन मैं तुम्हें एक बलिदान दूंगा। और उस समय वह जो कर रहा है, वह न्यायाधीश को रिश्वत देने की कोशिश कर रहा है। और उसके पास एक एयरटाइट केस है.

वह सही है, लेकिन वह सिर्फ यह सुनिश्चित करना चाहता है कि विश्वास की कमी के कारण, वह यह सुनिश्चित करना चाहता है कि प्रभु उसके लिए निर्णय लें। और इसलिए, वह अपनी सोच में मूर्तिपूजक है। यह जजों का काल है.

वह कुछ बुतपरस्त सोच में फंस गया है। और इसलिए, वह सोच रहा है, अरे, मैं भगवान को अंतिम बलिदान दूंगा। खैर, याद है क्या हुआ था.

वह घर पहुंचता है और उसकी बेटी, जो पहली चीज दरवाजे से बाहर आती है, मैं उसे बलिदान के रूप में पेश करूंगा। और शायद उसने सोचा कि यह कोई जानवर होगा. भाषा में कुछ अस्पष्टता है, शायद कोई अन्य व्यक्ति।

लेकिन जाहिर तौर पर भाषा इतनी लचीली थी कि इसमें एक इंसान भी शामिल हो गया क्योंकि वह अपनी बेटी की पेशकश करने के लिए मजबूर महसूस करता है। उसकी बेटी बाहर आती है, वह जाता है, अरे नहीं, मैंने नहीं सोचा था कि तुम वही होगे। और फिर, मेरी राय में, उन लोगों के बीच बहस चल रही है जो न्यायाधीशों का अध्ययन करते हैं, मुझे लगता है कि उन्होंने अपनी बेटी को पूरी तरह से होमबलि के रूप में भगवान को अर्पित कर दिया।

मुझे नहीं लगता कि उस निष्कर्ष से बचने का कोई रास्ता है। ये इसी की याद दिलाता है. शाऊल अपनी सेना को श्राप देकर उनकी जीत सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहा है, अगर वे इसका पालन नहीं करते और पलिश्तियों को नहीं हराते।

और वह अपने ही बेटे, जोनाथन के जीवन को खतरे में डालता है। लेकिन सौभाग्य से इसराइल और जोनाथन के लिए, इसराइली सेना ने आगे आकर जोनाथन को बचा लिया, चाहे कुछ भी हुआ हो। तब शाऊल ने पलिश्तियों का पीछा करना बंद कर दिया और वे अपने देश में चले गए।

और फिर उसके बाद शाऊल ने जो किया उसका एक प्रकार से सारांश है। और उसने, अपने श्रेय के लिए, इज़राइल पर उनके राजा के रूप में जीत हासिल की। और फिर एक ऐसा अनुभाग है जो शाऊल के परिवार के बारे में थोड़ी बात करता है, जो हमें जानकारी दे रहा है जो कहानी के बाकी हिस्सों के लिए उपयोगी होगी।

और यह इस और अगली साहित्यिक इकाई, जो कि 1 शमूएल 15 है, के बीच थोड़ी सी बाधा पैदा करने जैसा है। इसलिए, इस तीसरे खंड में, हम देखते हैं कि शाऊल उस महान जीत को कमजोर कर देता है जो जोनाथन ने हासिल की थी। और यहाँ पाठ हैं.

फिर, अपने स्वयं के सम्मान के प्रति चिंता ईश्वरीय आशीर्वाद को कमजोर कर सकती है। भगवान हमें अपने सेवकों के रूप में आशीर्वाद देना चाहते हैं, लेकिन कभी-कभी हम इतने आत्म-केंद्रित हो जाते हैं और भगवान जो हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं और उनके राज्य कार्यक्रम के बजाय अपने स्वयं के सम्मान में व्यस्त हो जाते हैं, कि हम उन आशीर्वादों को कम कर सकते हैं जो भगवान हमारे रास्ते में लाना चाहते हैं। . हम इतने आत्ममुग्ध हो जाते हैं.

जब आप आत्म-मुग्ध हो जाते हैं, तो लोगों के साथ संघर्ष होने लगता है और हम इस कहानी में यही देखते हैं। और साथ ही, धार्मिक औपचारिकता में व्यस्तता भी। शाऊल के मामले में, यह श्राप और बलिदान थे और इस प्रकार की चीजें, विशेष रूप से जल्दबाज़ी में ली गई प्रतिज्ञाओं या शपथों के रूप में, परमेश्वर के कार्य को बाधित कर सकती हैं।

तो, यहाँ 1 शमूएल 13 और 14 में एक दिलचस्प विवरण है, बस वास्तव में समीक्षा करने के लिए , शाऊल ने अपनी अवज्ञा के कारण अपने राजवंश को खो दिया। फिर हम विडम्बना से देखते हैं कि शाऊल का पुत्र, जो राजा होता, एक महान आस्थावान व्यक्ति, एक महान विजय की अलख जगा रहा है। यहोवा ने इस्राएल को बड़ी विजय दिलाई।

लेकिन फिर शाऊल ने, अपने लिए प्रतिशोध लेने की व्यस्तता के कारण उस सब को कम कर दिया, और ऐसा करने की प्रक्रिया में, अपने बेटे को उस स्थान पर लाया जहां वह उसे मारने के लिए तैयार था। और सौभाग्य से, इस्राएली सेना ने कदम रखा। अगले पाठ में, हम अध्याय 15 को देखेंगे, और शाऊल के लिए चीजें और भी बदतर होने वाली हैं।

अध्याय 15 में वह पहले ही अपना राजवंश खो चुका है। वह फिर से प्रभु की अवज्ञा करने जा रहा है, और इस मामले में, प्रभु उसे सूचित करते हैं, कि आप व्यक्तिगत रूप से राजा के रूप में हटाए जाने वाले हैं। आप अपना शासन समाप्त नहीं करने जा रहे हैं।

तो, हम अपने अगले पाठ में उस अंश को देखेंगे।

यह डॉ. बॉब चिशोल्म 1 और 2 सैमुअल पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 9, 1 सैमुअल 13-14 है। शाऊल ने एक राजवंश को गँवा दिया, जोनाथन के विश्वास ने एक जीत को प्रज्वलित कर दिया, और शाऊल ने एक जीत को कमजोर कर दिया।